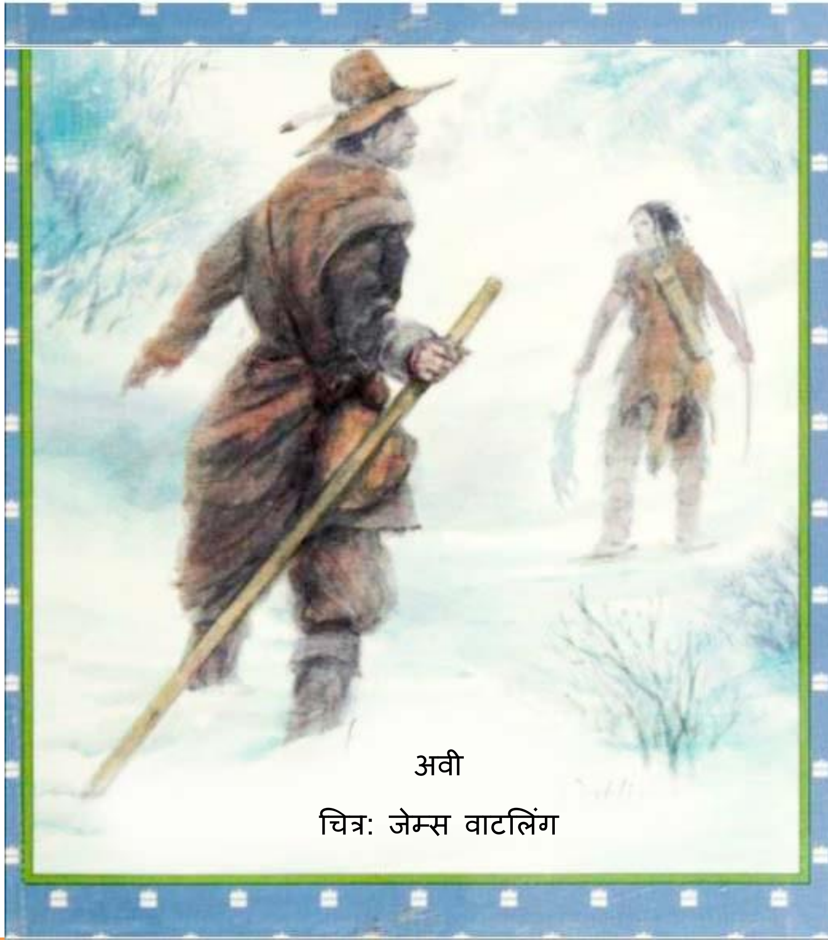
"प्रोविडेंस" - ईश्वर के विधान की खोज

रोजर विलियम्स की कहानी



अवी

चित्र: जेम्स वाटलिंग

“ईश्वर पर अपना विश्वास रखो. वो तुम्हारी देखभाल करेगा. मैरी, जिसे हम ईश्वर का विधान कहते हैं, उसे मैं अवश्य ढूंढ लूंगा.”

वर्ष 1635 का है. मैरी और उसका परिवार मैसाचुसेट्स-बे कॉलोनी में रहते थे. स्वतंत्रता और समानता के बारे में नए विचारों का प्रचार करने के लिए उसके पिता रोजर विलियम्स पर एक मुकदमा चल रहा था. फिर उन्हें एक गुप्त चेतावनी मिली कि पिताजी को दोषी पाया गया था. इससे पहले कि सैनिक उन्हें गिरफ्तार करते, रोजर वहां से भाग गए. उन्होंने अंधेरे, सर्द जंगलों में यात्रा की जहां उनकी एकमात्र उम्मीद अपने दोस्तों, नारगांसेटेट इंडियंस को ढूंढना थी. क्या मैरी, अपने पिता को दोबारा कभी देख पाएगी? क्या रोजर को ईश्वर का विधान मिलेगा?

रोजर विलियम्स ने बाद में "प्रोविडेंस, रोड आइलैंड" कैसे बसाया, अवी द्वारा सुनाई प्रेरक कहानी में जेम्स वेटिंग के आश्चर्यजनक चित्रों ने जान डाल दी है.

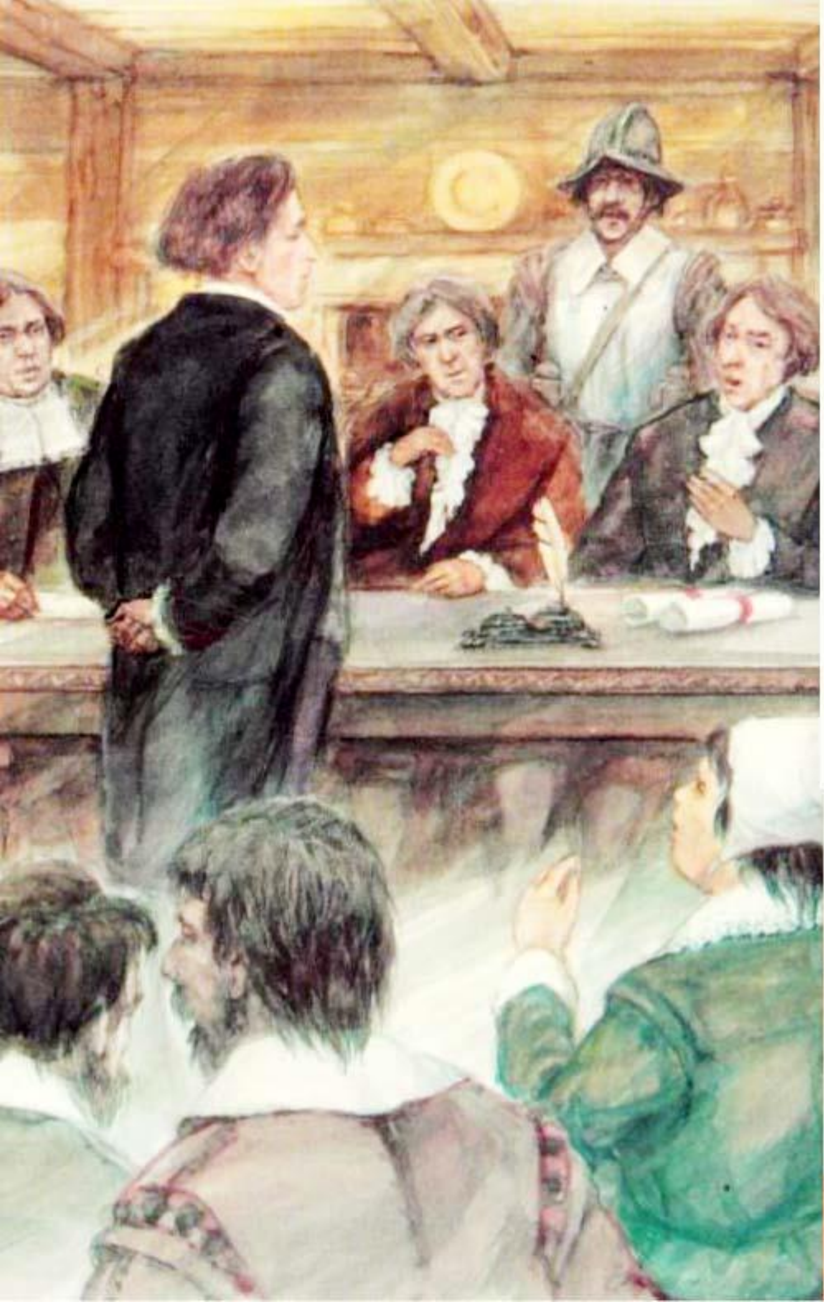
"**प्रोविडेंस**" - ईश्वर के विधान की खोज

रोजर विलियम्स की कहानी



अवी

चित्र: जेम्स वाटलिंग



1 - मुक़दमे की सुनवाई

1635 का साल था. मैसाचुसेट्स-बे कॉलोनी की कचहरी के अंदर सब कुछ धुंधला और शांत था. न्यायाधीश और मंत्री कमरे में सामने की एक लंबी मेज पर एक-साथ बैठे थे. उन लोगों के सामने मेरे पिता - रोजर विलियम्स खड़े थे.

मैं अपनी माँ के साथ कमरे में पीछे थी. पिताजी हमारी ओर मुड़े और मुस्कुराये. मैंने अपनी मां का हाथ दबाया.







बोस्टन के मुख्यमंत्री जॉन कॉटन, न्यायाधीशों और अन्य मंत्रियों के केंद्र में बैठे थे.

"रोजर विलियम्स," उन्होंने कहा, "आप पर खतरनाक नए विचारों का प्रचार करने का आरोप है. क्या आप अदालत को बताएंगे कि आप वास्तव में इन बातों पर विश्वास करते हैं या नहीं?"

फिर सभी लोग आगे की ओर झुके.

पिताजी ने कहा, "मुझे अपने मन की बात कहने में कोई डर नहीं है."

"रोजर विलियम्स," जॉन कॉटन ने कहा, "क्या आप मानते हैं कि लोगों को चर्च में शामिल होना चाहिए?"

"नहीं," पिताजी ने कहा, "नहीं, यदि वो लोगों की इच्छा के विरुद्ध हो तो."

कोर्ट में मौजूद दर्शकों की चीख निकल गई.

"शांति!" जॉन कॉटन चिल्लाए.

"क्या यह सच है," जॉन कॉटन ने पूछा, "क्या आप आप यह मानते हैं कि चर्च और सरकार के रोल अलग-अलग होने चाहिए?"

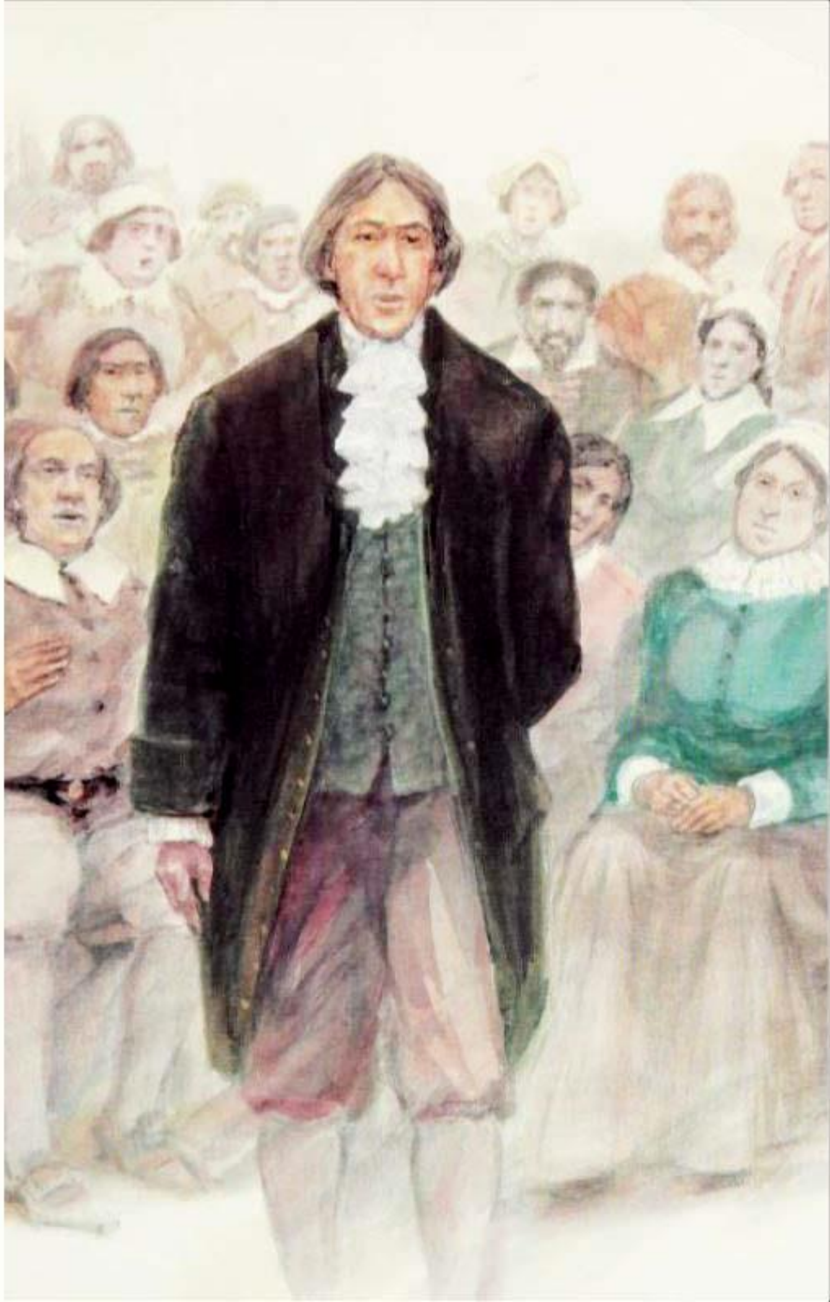
"हाँ, सरकार और चर्च के नेताओं का एक साथ बैठना और लोगों को यह बताना कि उन्हें कैसे सोचना और कार्य करना है, गलत है," पिताजी ने कहा.

"उसकी इतनी मजाल!" एक आदमी चिल्लाया. "वो कैसा ईसाई है?"

"चुप रहो!" जॉन कॉटन ने आदेश दिया. सिपाहियों ने अपनी बंदूकें ज़मीन पर ठोकीं. अदालत फिर से शांत हो गई.

"और क्या आप इस बात में भी विश्वास करते हैं?" जॉन कॉटन ने कहा, "कि हम यूरोपीय लोगों को, इंडियंस की ज़मीन लेने का कोई अधिकार नहीं है?"

"असंभव!" दर्शकों में से एक चिल्लाया.





जॉन कॉटन ने उदास होकर अपना सिर हिलाया. "रोजर विलियम्स." उन्होंने कहा, "अच्छा अब आप घर जाएं और हमारे फैसले का इंतजार करें."

मैं अपने पिता का चेहरा देखने के लिए उठ खड़ी हुई. मेरी मां ने मुझे नीचे खींच लिया, लेकिन मैंने देखा कि पिताजी मुस्कुरा नहीं रहे थे.

"इस आखिरी आरोप पर आपका क्या कहना है, रोजर विलियम्स?" जॉन कॉटन ने पूछा.

मेरे पिता संभलकर बोले. "मैं इंडियंस को अच्छी तरह से जानता हूं. वे भी हमारी तरह ही इंसान हैं. क्योंकि इंडियंस, इंग्लैंड के राजा की जमीन नहीं ले सकते, इसलिए हमें भी उनकी जमीन लेने का कोई अधिकार नहीं है."

"गद्दार!" दर्शकों में से एक चिल्लाया. फिर न्यायाधीशों की भौंहें तन गईं.







2 - खतरा

ठोक! ठोक! ठोक!

दरवाज़े पर ठोकने की आवाज़ ने मुझे जगा दिया. उस समय किसी के आने का मतलब ज़रूर कुछ महत्वपूर्ण होगा. मैंने छोटी खिड़की से बाहर झाँका और बाहर एक आदमी को खड़े हुए देखा. उसके हाथ में एक लालटेन थी.



उस आदमी ने फिर से दस्तक दी, पहले से भी ज्यादा जोर से - ठोक! ठोक! ठोक!

मैंने अपना कंबल इकट्ठा किया और सीढ़ियों के ऊपर चढ़ी. मेरे पिता दरवाजे पर गए. पिताजी ने मुझे नहीं देखा. मैं देखने और सुनने के लिए वहां अँधेरी सीढ़ियों पर ही बैठ गई.

"कौन है?" पिताजी ने पूछा. उस आदमी ने अपनी आवाज धीमी रखने की कोशिश की. वो घर में किसी को जगाना नहीं चाहता था, लेकिन मां पहले ही उठ चुकी थीं.

"रोजर विलियम्स?" बाहर के आदमी ने कहा. "क्या आप घर पर हैं? मैं गुडमैन नील हूं. मैं आपके लिए एक बुरी खबर लेकर आया हूं!"

मेरे पिता ने मेरी माँ की ओर देखा. "वो एक दोस्त है," पिताजी ने कहा, और फिर उन्होंने दरवाज़े की कुंडी खोल दी.





एक बार अंदर जाने पर, गुडमैन नील ने अपने कंधों से बर्फ हटाई और अपने ठंडे जूते फर्श पर पटके.

"मित्र, तुम इस समय क्यों आए?" पिताजी ने पूछा.

गुडमैन नील ने कहा, "वही हुआ जिसका हमें डर था." उसने अपनी आवाज धीमी रखी. "वे तुम्हें गिरफ्तार करने के लिए आ रहे हैं."

"कौन आ रहा है?"

"जॉन कॉटन और अन्य लोग," गुडमैन नील ने कहा. "तुम्हें दोषी पाया गया है. अब तुम्हें इंग्लैंड वापस भेज दिया जाएगा."



मेरे पिता ने कहा, "मैं सिर्फ इतना चाहता हूं कि हर व्यक्ति अपने के बारे में खुद सोचे."

"फिर भी सर," गुडमैन नील ने कहा, "जॉन कॉटन मुख्यमंत्री हैं, और उनके दोस्त आपको यहां पर अपने विचारों का प्रचार करने की अनुमति बिल्कुल नहीं देंगे."

"इंग्लैंड!" मेरी माँ रो पड़ीं,

"अरे!"

"इंग्लैंड में राजा, रोजर को जेल में डाल देंगे," माँ ने कहा. "या फिर वो उन्हें उपदेश के लिए फाँसी पर लटका देंगे."

"विलियम्स, हमारे अपने नेता भी ऐसा ही करेंगे."







"गुडमैन नील," मेरी माँ ने कहा, "क्या आप जानते हैं कि वे लोग कब आएंगे?"

"मुझे डर है कि आप सुबह होने से पहले ही उन्हें देखेंगे. वे कैप्टन गिलमोर को भेज रहे हैं."

"लेकिन कैप्टन गिलमोर को तो कल इंग्लैंड जाना है," पिताजी ने कहा.

"बिल्कुल," गुडमैन नील ने उत्तर दिया. "आपको अपने जहाज़ पर चढ़ाने के लिए कप्तान के पास सैनिक भी होंगे. वे सुबह ज्वार आने के समय अपने जहाज़ को चलाने की योजना बना रहे हैं."

"तुम दूसरे शहर में भी नहीं जा सकते, रोजर," मेरी माँ ने कहा. "तुम्हें मैसाचुसेट्स छोड़ देना चाहिए. यहाँ हर जगह तुम्हारे दुश्मन हैं."

"ऐसा ही है, मिस्टर विलियम्स," गुडमैन नील ने अपनी सहमति व्यक्त की. "या तो आपको भागना होगा, नहीं तो फिर अमित्र देश इंग्लैंड की शीतकालीन यात्रा करनी होगी."

मेरे पिता स्थिर खड़े रहे. "अरे ज़रा सोचो तो," उन्होंने दुखी होकर कहा, "अभी कुछ साल पहले ही तो हम अपनी धार्मिक स्वतंत्रता हासिल करने के लिए न्यू इंग्लैंड आए थे." वो गुडमैन नील की ओर मुड़े और उन्होंने अपना हाथ बढ़ाया. "आपकी दयालुता के लिए बहुत धन्यवाद, सर."

"नहीं, सर, मुझे धन्यवाद मत दीजिए. मैं हमेशा आपकी हर बात से सहमत नहीं हूं, लेकिन किसी व्यक्ति को उसके विचारों के लिए दंडित करना एकदम क्रूर है. मैं ईश्वर से आपकी सुरक्षा की कामना करता हूं."

फिर मेरी माँ की ओर सिर हिलाकर नील गुडमैन जल्द ही वहां से चला गया.





जब वह चला गया, तो मेरी माँ ने कहा, "क्या तुम जाओगे, रोजर?"

"मुझे जाना ही होगा," पिताजी ने कहा.

"पर कहाँ?" मैं सीढ़ियों से चिल्लाई.

पिताजी ने चारों तरफ देखा और वो मुझे देखकर आश्चर्यचकित रह गये. "मैरी," उसने कहा, "क्या तुम सबकुछ सुन रही थीं?"

"आप कहाँ जाएँगे?" मैंने पिताजी से पूछा.

उन्होंने कहा, "देखो, उन्होंने मेरे लिए कोई विकल्प नहीं छोड़ा है. अब मैं घने जंगल में यात्रा करूंगा."



3 - पलायन

मेरे पिता ने अपने सबसे गर्म कपड़े, जूते, डबल लिनेन और लबादा पहना. फिर उन्होंने एक थैले में रोटी और सूखा मांस लिया. उन्होंने जलाऊ लकड़ी के ढेर से एक लंबी छड़ी भी अपने साथ ली.

"वो छड़ी किस लिए है?" मैंने पूछा. "क्या आप भालुओं से लड़ने जा रहे हैं?"

"नहीं बेटी, उस छड़ी से मुझे बर्फ से निकलने में मदद मिलेगी."

"लेकिन इंडियंस का क्या? क्या आपको उनका कोई डर नहीं है?"

"देखो मैरी, मैं नारगांसेटेट इंडियंस की भाषा और उनके तौर-तरीके जानता हूं. हम एक-दूसरे के दोस्त हैं."

मेरे पिता अब जाने के लिए तैयार थे. उन्होंने मुझे, मेरे छोटे भाई और माँ को गले लगाया.

मैं रोने लगी. पिताजी ने मेरे चेहरे से आँसू पोंछे. "भगवान पर विश्वास रखो." उन्होंने मुझ से कहा. "वो तुम्हारी परवाह करेगा. वो तुम्हारी ज़रूर देखभाल करेगा. मैरी, जिसे हम भगवान का विधान कहते हैं, मैं उसे निश्चित रूप से पा लूंगा."





जब तक संभव हुआ मैं अपनी छोटी खिड़की से पिताजी को देखती रही. जल्द ही वो बर्फीले सफेद अंधेरे में खो गया.

फिर मैं दौड़कर अपनी मां के पास गई और मैंने उनकी गोद में अपना चेहरा छुपा लिया.

"हमें वैसा ही करना होगा जैसा तुम्हारे पिता ने कहा है," मां उदास होकर फुसफुसाईं. "हमें ईश्वर के विधान पर भरोसा रखना ही होगा."





भोर होते ही कैप्टन गिलमोर और चार सैनिक मेरे पिता को गिरफ्तार करने आए. लेकिन तब तक उन्हें बहुत देर हो चुकी थी. अब तक पिताजी काफी दूर निकल गए होंगे.

"ओह, पिताजी," मैंने बार-बार यह बात फुसफुसाई. "ईश्वर का विधान खोजो."





4 - जंगल

बाद में मेरे पिता ने मुझे बताया कि कैसे वो बर्फ के भारी बहाव के बीच वे दक्षिण की ओर जंगलों में गए. वहाँ कोई सड़कें नहीं थीं और वो वहां की इंडियंस की पगडंडियों को नहीं जानते थे. रास्ते में कोई सराय या घर भी नहीं था जहाँ वह रुक सकें.



सबसे पहले उनकी एकमात्र योजना बे कॉलोनी से दूर जाने की थी. लेकिन जैसे-जैसे वो धीरे-धीरे दक्षिण की ओर बढ़े, उन्होंने अपने दोस्त नारगांसेटेट इंडियंस को खोजने की कोशिश की.

वो बार-बार अपना रास्ता भूल जाते थे. फिर उन्हें बार-बार सूर्य और तारों की स्थिति को देखकर अपनी दिशा ठीक करनी पड़ती थी. जब तूफ़ान आते तो पिताजी पेड़ों की खोहों में या गुफाओं में आश्रय लेते थे.



जल्द ही उके पास भोजन खत्म हो गया, फिर उसे कुछ बातें याद आईं जो उनके इंडियंस दोस्तों ने उन्हें जंगल में भोजन खोजने के बारे में सिखाई थीं. फिर पिताजी ने खोजा और उन्हें खाने के लिए सूखे जामुन, मेवे और अन्य चीजें मिलीं. इस तरह वो आगे बढ़ पाए.

वो जितना आगे गए वो उतने ही कमजोर होते गए. जैसे-जैसे वो दक्षिण की ओर बढ़े, उन्होंने शक्ति और भोजन के लिए प्रार्थना की.

एक रात, जब वो एक पेड़ के झुरमुट में सोने गए, तो उन्होंने सोचा कि शायद अब वो दुबारा फिर कभी किसी जीवित इंसान को नहीं देख पाएंगे.

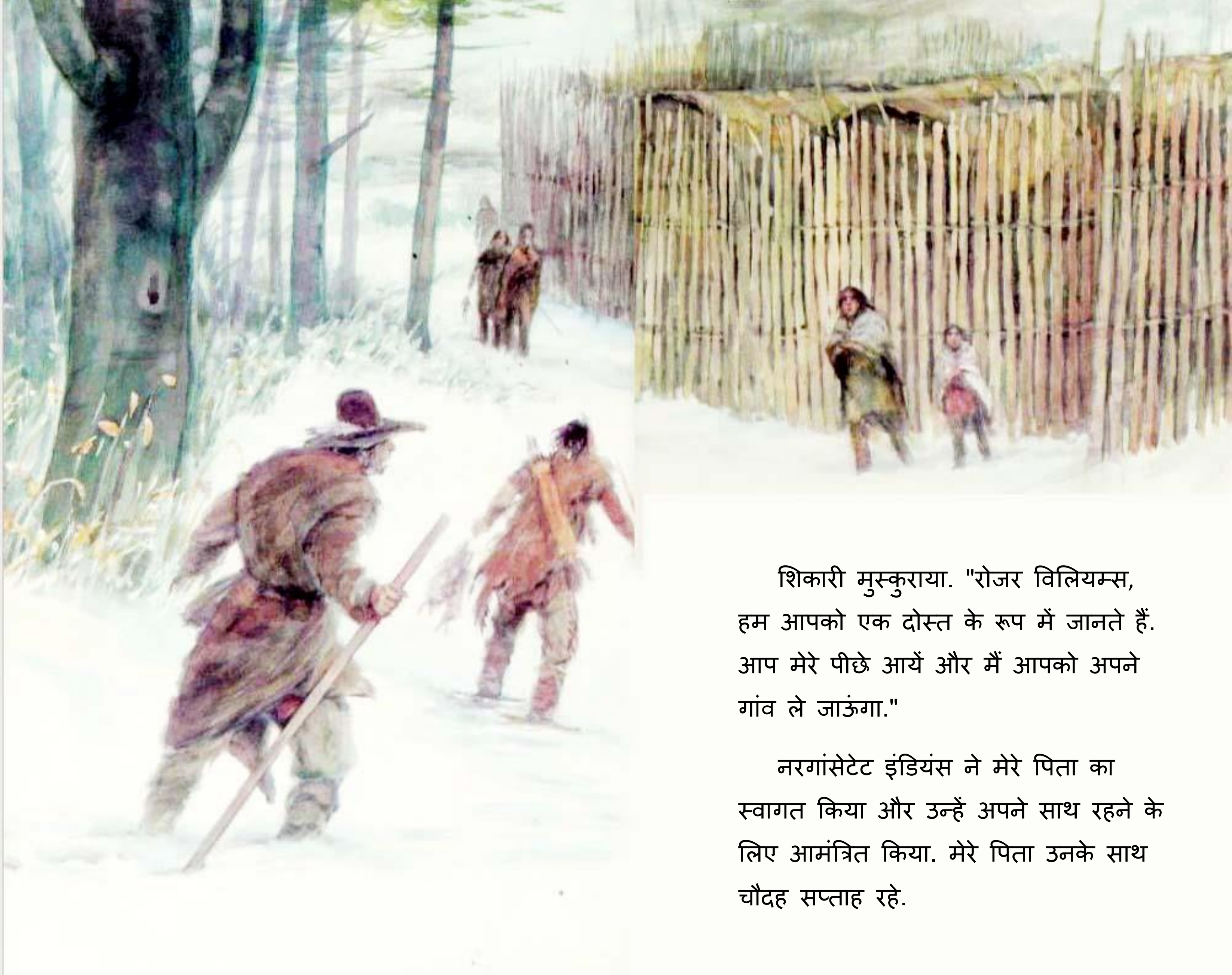


5 - ईश्वर का विधान ढूँढना

सुबह हो चुकी थी जब किसी के स्पर्श से पिताजी की आँख खुली. उन्होंने चौंककर पेड़ के तने से बाहर देखा. उनके सामने एक नरगांसेटेट इंडियन शिकारी खड़ा था.

"मैं रोजर विलियम्स हूं," मेरे पिता ने नरगांसेटेट भाषा में कहा. "मैं खो गया हूं और मेरे पास खाना नहीं है. कृपया मेरी मदद करें."





शिकारी मुस्कुराया. "रोजर विलियम्स, हम आपको एक दोस्त के रूप में जानते हैं. आप मेरे पीछे आयें और मैं आपको अपने गांव ले जाऊंगा."

नरगांसेटेट इंडियंस ने मेरे पिता का स्वागत किया और उन्हें अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित किया. मेरे पिता उनके साथ चौदह सप्ताह रहे.



जब वो वहां थे, तो उन्होंने और नारगांसेटेट इंडियन नेताओं ने, धर्म और सरकार के बारे में चर्चा करते हुए घंटों बिताए.

उन्होंने पिताजी से कहा, "आप और आपका परिवार हमारे बीच रह सकता है."

"आपने हमारी भाषा सीख ली है और हमें जानना शुरू कर दिया है. हम शांति से रहने के लिए आप पर भरोसा करते हैं."

इंडियंस ने, मेरे पिता को सुंदर नारगांसेटेट खाड़ी के शीर्ष पर बे कॉलोनी के बाहर बसने के एक जगह भी दिखाई. वहां पर मीठे पानी का एक झरना भी था.

मेरे पिता बहुत खुश हुए. उन्होंने वहीं पर हमारे लिए एक नया घर बनाने का फैसला किया. चूँकि उनके लिए बोस्टन वापस जाना सुरक्षित नहीं था, इसलिए उनके एक इंडियन मित्र ने आकर हमें वो संदेश दिया.



मैंने उस इंडियन मित्र को अपने घर आते हुए देखा. उसने मुस्कुराते हुए मेरा स्वागत किया और मुझे एक पत्र दिया. मैं पिताजी की लिखाई को तुरंत पहचान गई. फिर मैं माँ के पास भागी. माँ ने पत्र को ज़ोर से पढ़कर सुनाया.

"तुम लोग मेरे दोस्त के साथ आओ और मेरे साथ यहाँ आकर रहो," मेरे पिता ने लिखा. "हमें रहने के लिए एक नई जगह मिली है. हम यहां पर आज़ाद होकर जी सकते हैं."

हमने जल्दी से अपना सामान पैक किया और दक्षिण की ओर कूच किया. समय के साथ-साथ नई बस्ती को स्थापित के लिए कई अन्य परिवार भी हमारे साथ शामिल हुए.

जब मैं और पिताजी खाड़ी और छोटी बस्ती की ओर देखने वाले ढलान पर खड़े थे तो मुझे उस पर गर्व महसूस हुआ.

"पिताजी," मैंने कहा, "क्या आपको नहीं लगता कि हमें अपने इस नए गांव का एक नाम देना चाहिए?"

"ज़रूर," उन्होंने सहमति जताते हुए कहा. "तुम्हे क्या लगता है, हमें इसे क्या बुलाना चाहिए?"

मैंने एक पल के लिए सोचा. फिर मैंने कहा. "हम इसे "प्रोविडेंस" कहेंगे. आपके संकट में "प्रोविडेंस" यानि भगवान के विधान ने ही आपकी मदद की थी."

पिताजी मुस्कराए. "हाँ, 'प्रोविडेंस' एक अच्छा नाम रहेगा. और वो पृथ्वी पर सबसे मुक्त स्थान बनेगा."



लेखक का नोट

रोजर विलियम्स का 1603 या 1604 में लंदन में जन्म हुआ था. उस समय इंग्लैण्ड में अंग्रेजी चर्च और सरकार, आपस में घनिष्ठ रूप से मिले जुड़े थे. राजा चर्च का प्रमुख था. राजा और उसकी संसद ने ऐसे कानून बनाए जिससे लोगों के लिए एक निश्चित तरीके से धर्म का पालन करना अनिवार्य हो गया. इस जीवन शैली का विरोध करना उससे "असहमत" होना था.

रोजर विलियम्स और उनकी पत्नी 1630 में उन 'असहमत' लोगों में से थे जो इंग्लैंड छोड़कर अमेरिका आए. वे खुद को "प्यूरिटन" कहते थे क्योंकि वे अंग्रेजी चर्च को "शुद्ध" करना चाहते थे. लेकिन जल्द ही मैसाचुसेट्स का प्यूरिटन चर्च भी, पुराने अंग्रेजी चर्च की तरह ही जड़ बन गया.

जो बात विलियम्स को विशेष बनाती है वो यह है कि, हालांकि वो एक कट्टर ईसाई थे, फिर भी वो मानते थे कि चर्च या सरकार के लिए किसी व्यक्ति पर अपना धार्मिक विश्वास थोपना गलत था. जब विलियम्स ने 1636 में "प्रोविडेंस" की स्थापना की, तो उनका उद्देश्य एक ऐसी कॉलोनी स्थापित करना था जहां चर्च और राज्य को अलग-अलग रखा जा सके. बहुत समय पहले रोजर विलियम्स के वीरतापूर्ण संघर्षों के कारण, यह अलगाव अब अमेरिका के संविधान में स्थापित हो गया है.

